1 यूहन्ना

यूहन्ना द्वारा लिखा पहला पत्र

लेखकः

वह यूहन्ना जो प्रभु यीशु के आरम्भिक शिष्यों में से एक था।

समयः

85 ईस्वी में।

विषयः

जिन लोगों ने परमेश्वर की कृपा से मसीह में नए आत्मिक जन्म का अनुभव किया है, यह चिट्ठी उन्हें लिखी गई थी। वे परमेश्वर के प्यारे बच्चे हैं (2:1,12,13,18,28; 3:7; 4:4; 5:21)। वे परमेश्वर के परिवार के सदस्य हैं। यूहन्ना उन्हें इस सच्चाई के अनुसार जीने के लिए कहता है। वह यह है कि उनकी परमेश्वर के साथ और दूसरों के साथ गहरी सहभागिता होनी चाहिए (1:3-7)। उन्हें अपने गुनाह को कबूल करना चाहिए और क्षमा पानी चाहिए (2:3-7)। एक दूसरे से स्नेह होना चाहिए (3:11-20)। इस चिट्ठी में तीन मुख्य पद हैं "जीवन" (1:1-2; 2:25; 3:15; 5:11-12,13,20) "रोशनी" (1:5,7; 2:8-9,10) और "स्नेह" (3:11-18; 4:7-12)। एक दूसरा खास शब्द है "जानना" (2:3,5; 4:6-7; 5:13,18)। एक विशेष विषय है, "आश्वासन"-यह कि हम कैसे जान सकते हैं कि हम परमेश्वर के परिवार में उत्पन्न हुए हैं।

1 जो सदा से थे, जिन्हें हम ने सुना, अपनी आँखों से देखा, ध्यान से देखा और अपने हाथों से छुआ। वही जीवन के वचन थे। 2इसलिए कि जीवन प्रगट हुआ और हम ने देखा भी और साक्षी देने के साथ तुम्हारे सामने ऐलान भी करते हैं, वही अनन्त जीवन, जो पिता के साथ था और हम पर प्रगट हुआ। 3उन्हें हम ने देखा-सुना और उसका बयान करते हैं, ताकि तुम भी हमारे साथ संगति कर सको। सच में हमारी सहभागिता पिता और बेटे यीशु मसीह के साथ है। 4ये बातें हम तुम्हें इसलिए लिखते हैं ताकि तुम खुशी से भर जाओ।

5जो सु-संदेश हमें यीशु से मिला और तुम्हें बताते हैं वह यह है कि परमेश्वर रोशनी हैं और उन में किसी तरह का अँधेरा नहीं

1:1 "सदा"- उत्पत्ति 1:1 यूहन्ना 1:1

"हम ने"- यूहन्ना मसीह के उन शिष्यों की बात कर रहा है जो आरम्भ में चुने गए थे। जब यीशु इस धरती पर थे, उन शिष्यों ने व्यक्तिगत तरीके से यीशु की शिक्षाओं को सुना था और जो कुछ किया, देखा था। तुलना करें 2 पतर. 1:16; यूहन्ना 15:27; प्रे.काम 4:20.

"छुआ"- देखें लूका 24:39; यूहन्ना 20:27. यह यीशु के जी उठने के बाद की बात है।

"जीवन के वचन"- यीशु स्वयं वह वचन (शब्द) हैं, जो मनुष्य जाति के लिए हैं। वह हमेशा की ज़िन्दगी हैं (5:20; यूहन्ना 1:4; 5:26; 14:6)। वह लोगों को यह ज़िन्दगी देने आए थे (यूहन्ना 10:10; 6:51)। उनका संदेश लोगों में एक नये जीवन की शुरूआत करता है (रोमि. 5:21; 6:23)।

1:2 दिखायी दिया - अनन्त जीवन या हमेशा का जीवन यीशु मसीह के आगमन के बाद से ही संभव था (यूहन्ना 1:14; 2 तीमु. 1:10)।

"अनन्त जीवन"- 5:11-12; यूहन्ना 3:16.

"पिता के साथ"- यूहन्ना 1:2; 17:5 यीशु पिता के साथ थे त्रिएकत्व परमेश्वर में। नोट्स देखिए यूहन्ना 17:1,5; 1 कुरि. 8:5-6; 2 यूहन्ना 3.

1:3 हम ने देखा, तीन पदों में यहाँ तीसरी बार वह ऐसा कहता है। वह ज़ोर डालकर कहता है कि उसने और दूसरे प्रेरितों ने इधर-उधर से मिली सूचना या कहानियों (घटनाओं) को इकट्ठा कर के अपने संदेश को नहीं पहुँचाया है। जो कुछ यीशु के शिष्य कह रहे थे, उसे अच्छी तरह जानते थे।

"सहभागिता"- प्रे.काम 2:42; 1 कुरि. 1:9; 2 कुरि. 13:14; फ़िलि. 3:10. इस यूनानी शब्द का मतलब है मिल बाँटकर रहना। यीशु की सच्चाई देने के लिए यूहन्ना के पास पुख्ता कारण थे। यहाँ पहला यही है। दूसरे और पद 4; 2:1,12-14,21; 5:13 में है।

"पिता और बेटे...के साथ"- त्रिएकत्व में यूहन्ना इन दोनों व्यक्तियों को अलग देखता है। (मत्ती 3:16-17 में त्रिएकत्व पर नोट्स)। लेकिन ये तीनों इतनी एकता में हैं, कि एक के साथ सहभागिता, दूसरे दोनों के साथ भी है। यीशु के परमेश्वर पर दूसरे पद फ़िलि. 2:6; लूका 2:1 में हैं। परमेश्वर के साथ सहभागिता का मतलब है उन्हें जानना (यूहन्ना 17:3), इस पृथ्वी पर उनकी खुशी में शामिल होना शान्ति को पहनाना, और उनके सोच विचार और काम में हिस्सेदार होना। यीशु के स्वामित्व को अपनाने वाले लोग ही परमेश्वर को जानते हैं और उनके साथ सम्बन्ध रखते हैं। किसी और को आत्मा द्वारा जिए जाने वाले जीवन के बारे में ज्ञान नहीं है (5:11-12)

1:4 "खुशी"- लूका 2:10; यूहन्ना 15:11; 16:22,24; 17:13; रोमि. 14:17; गल. 5:22. सत्यता को अपने जीवन में कबूल कर के व्यवहार में लाने से ही खुशी मिल सकती है। इसलिए यूहन्ना उन लोगों को वह सच्चाई सिखाता है जो उसने यीशु से हासिल की थी। मसीह की पूर्ण सच्चाई और उसके लिए आज्ञाकारिता का मतलब है पूरा आनन्द।

1:5 "परमेश्वर रोशनी हैं"- भौतिक नहीं आत्मिक। बाईबल में अँधेरे का मतलब है गुनाह, आत्मिक अज्ञानता, रोशनी पवित्रता और सत्य की तरफ़ इशारा है - मत्ती 4:16; लूका 2:32; यूहन्ना 1:4-5; 3:19-20; 8:12; 11:10; 12:36,46; प्रे.काम 26:18; रोमि. 13:12; 2 कुरि. 4:4,6; इफ़ि. 5:8-9,13,14; 1 तीमु. 6:16.

"अँधेरा नहीं"- इस दुनिया में बहुत बुराई है, लेकिन परमेश्वर में नहीं। परमेश्वर ने न बुराई को बनाया और न इसके पक्ष में हैं। वह पूरी तरह से पवित्र और शुद्ध हैं (लैव्य. 20:7; यशा. 6:3)।

है। 6यदि हम कहें कि हमारी उन के साथ सहभागिता है और अँधेरेपन का जीवन जियें, तो हम झूठे हैं और सच्चाई की ज़िन्दगी नहीं जी रहे हैं। 7लेकिन यदि हम रोशनी की ज़िन्दगी जियें, जैसे वह खुद रोशनी में हैं, तो एक दूसरे के साथ हमारी सहभागिता है और परमेश्वर के बेटे यीशु मसीह का खून हमें हमारे सभी गुनाहों से साफ़ करता है।

8अगर हम कहें कि हम में गुनाह नहीं है, तो हम अपने आपको धोखा देते हैं, और हमारे जीवन में सच्चाई नहीं है। 9यदि

1:6 "यदि हम कहें"- यह नामुमकिन है कि पाप और त्रुटि में रहें और पवित्रता तथा सच्चाई के साथ किसी तरह का संग हो। गुनाह के चुनाव का मतलब है परमेश्वर का त्याग। यदि हम परमेश्वर ही को त्याग दें तो उनके साथ किसी और बात में भागीदार कैसे हो सकते हैं? देखें 2 कुरि. 6:14. दुख की बात यह है कि तमाम लोग हालाँकि दावा करते हैं परमेश्वर को जानने का, लेकिन सच में जानते नहीं हैं। उनके जीवन देखने से कहा जा सकता है कि वे परमेश्वर को नहीं जानते हैं। तीतुस 1:16.

"झूठे"- ऐसे लोग तो धोखे में हैं या दूसरों को धोखा देने की कोशिश कर रहे हैं। हर तरह से उनके दावे खोखले हैं।

"सच्चाई की ज़िन्दगी"- सिर्फ़ यही ज्ञान को हासिल करना सुनकर या पढ़कर काफ़ी नहीं है। हमें इसका अभ्यास करना चाहिए।

1:7 रोशनी में जीने का मतलब क्या है? यूहन्ना अपनी पूरी चिट्ठी में यही सिखाता है। यह अँधेरे (गुनाह, अज्ञानता और त्रुटि) में रहने के विरोध में है। इसका अर्थ है बुराई (गुनाह) और वह सब जो परमेश्वर की इच्छा के खिलाफ़ है उस से मुँह फेर लेना, और जो करना चाहिए वह करना। यह परमेश्वर के प्रति खुले रहना है और जो हम हैं या करते हैं, उस सब से अपने को छिपाना नहीं है। यदि हम पारदर्शी जीवन जीना चाहें तो पहले खुद हमें रोशनी चाहिए। यह परमेश्वर का काम है कि वह हमें इस में लाएँ - 2 कुरि. 4:6; 1 पतर. 2:9; कुल. 1:12-13. रोशनी के राज्य या दायरे में होने की वजह से हमारा चालचलन भी वैसा होना चाहिए। 2:6.

"सहभागिता"- सच्ची मसीही सहभागिता तभी हो सकती है जब विश्वासी पारदर्शी जीवन जियेंगे। गुनाह और त्रुटि हमारे सम्बन्धों को खराब करेंगे।

"यीशु मसीह का खून"- विश्वासी हर दिन अपने विचारों, शब्दों और कामों में चूक जाते हैं (2:1; याकूब 3:2; गल. 2:11-13; 5:17; रोमि. 7:18; 1 राजा 8:46)। यदि वे परमेश्वर की रोशनी में जियेंगे, उनके गुनाह माफ़ हो जाएँगे, शुद्धता प्राप्त करेंगे। यह सब क्रूस पर यीशु की कुर्बानी की वजह से हैं (2:2)। शुद्धता का काम जारी रहता है।

1:8 यदि यीशु का खून हमें सब गुनाह से साफ़ करता है, क्या इसका मतलब है हम बेगुनाह हैं? नहीं, इसलिए तुरन्त यूहन्ना कहता है, इस पृथ्वी पर बेदाग कोई नहीं है। पौलुस जो महान प्रेरित था कहता है कि गुनाह उसके अन्दर है, रोमि. 7:17. दूसरे पद भी देखें मत्ती 7:11; रोमि. 7:14-15; गल. 5:16-17; 1 तीमु. 1:15; याकूब 3:2. हम में से कोई भी इस दुनिया में उस स्थान तक नहीं पहुँचेगा जहाँ हमें गुनाहों को मानने की ज़रूरत न पड़े और शुद्धता की भी जो यीशु के द्वारा है (मत्ती 6:12) अगर हम में से कोई यह समझे कि हमारे भीतर पाप स्वभाव पूरी तरह से निकाल दिया गया है, तो हम अपने आप को धोखा दे रहे हैं। हम अपने को दूर ले जा रहे हैं। हम कुछ ऐसे पर भरोसा कर रहे है जो सच नहीं है। हम ही इसके ज़िम्मेदार हैं और अपराधी भी। यह हमारा ख्याल है कि हम पाप रहित हैं, परमेश्वर का नहीं।

"सच्चाई नहीं है"- दूसरी तमाम सच्चाइयाँ हमारे जीवन में हो सकती हैं, लेकिन गुनाह के बारे में सत्य और इस से शुद्धता के बारे में सच हमारे अन्दर नहीं है, यदि हम सोचते हैं कि हमारा स्वभाव पाप रहित है। ऐसी हालत में हम सच्चाई का सामना करने के बजाए इस से बच रहे हैं, क्योंकि हम गुनाह को दूसरा नाम देकर इसे हल्का फुलका समझ रहे हैं। इस तरह से हमारे जीवन में झूठ समा जाता है। सभी विश्वासियों को चाहिए कि सिद्धता की तरफ़ बढ़ें, लेकिन सभी इसे पाते नहीं हैं - फ़िलि. 3:12. विश्वासी होने के नाते बुराई बगैर जीने का लक्ष्य तो होना चाहिए (2:1)। यदि हम जानबूझ कर नहीं तो बिना जाने करते हैं। बिना जाने किए गए गुनाह, गुनाह ही हैं कुछ

हम अपने पापों (गुनाहों) को मान लें,
यीशु हमें माफ़ करने में विश्वासयोग्य
और ईमानदार हैं और मलिनता को
पूरी तरफ़ साफ़ कर डालते हैं। 10यदि
हम कहें कि हम में कोई गुनाह नहीं
है, तो हम यीशु को झूठा ठहरा रहे हैं
और उनका वचन हमारे पास नहीं है।

2 मेरे बच्चो, मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिख
रहा हूँ, ताकि तुम किसी बात में बलवा
न करे। लेकिन यदि कोई इसका शिकार
हो जाता है, तो हमारे पास सच्चे यीशु मसीह

और नहीं (लैव्य. 4:1-2)। हम लोग जाने बूझे जो करते हैं उसमें गुनाह करने से बच जाते हैं, लेकिन जो हमें करना चाहिए उसे न करने से भी हम गुनाह करते हैं (देखे गिनती 32:23 के नोट्स और मत्ती 25:42-43)। हम में से कौन कह सकता है कि हमें जो करना चाहिए उसे करने में हम असफल नहीं होते हैं?

1:9 "हम"- यूहन्ना यीशु को अपनाने वालों को लिख रहा है (2:1,12-14) वह अपने आपको भी शामिल करता है। वह जानता था कि हर व्यक्ति को अपने पाप मानने की ज़रूरत है मत्ती 6:12; लूका 11:4 "मान लें, इस यूनानी शब्द का मतलब है उस बात पर राज़ी होना जो दूसरा व्यक्ति कहता है, यह मानना कि एक आरोप सही है।

"मान लें"- का मतलब है वही कहना जो परमेश्वर उनके बारे में कहता है। हमें गुनाह या पाप के लिए 'कमज़ोरी' या 'गलती' शब्द इस्तेमाल नहीं करने चाहिए। विचारों, शब्दों और कामों में जो परमेश्वर की सिद्ध इच्छा के खिलाफ़ (परमेश्वर और इन्सान के लिए प्रेम के खिलाफ़) है और जिसे जारी रखा जाता है, गुनाह है। साथ ही जो किया जाना चाहिए और नहीं किया जाता है, गुनाह है (याकूब 4:17; मत्ती 25:41-46; 1 शमू. 12:23)।

गुनाह करने से दोषी ठहरते हैं, और हमें माफ़ी की ज़रूरत पड़ती है। इसलिए हमें प्रभु परमेश्वर के साथ सहमत हो जाना चाहिए, माफ़ी के लिए मान लेना चाहिए। गुनाहों का मानना और पारदर्शी होना (रोशनी में चलना) साथ होना चाहिए। परमेश्वरीय रोशनी हमारे अपराधों का खुलासा करती है (इफ़ि. 5:13-14)। खुलासा होने पर हमें मानकर छोड़ देना चाहिए। विश्वासयोग्य - भजन 33:4; 111:7-8; 145:13; 146:6; 1 कुरि. 1:9; 2 तीमु. 2:13; इब्रा. 10:23; 11:11; 1 पतर. 4:19 परमेश्वर सदा अपनी कही बात, मुक्ति की योजना और अपने स्वभाव के प्रति ईमानदार हैं। वह माफ़ करने वाले हैं। निर्ग. 34:7; गिनती 14:18; नहे. 9:17; भजन 86:5; 99:8; 103:3; दानि. 9:9; मीका 7:18; मत्ती 6:12; 9:2; रोमि. 4:7-8; इब्रा. 8:12; याकूब 5:15. बाईबल साफ़ दिखाती है कि लोगों के अपराधों को माफ़ करने यीशु आए, ताकि बलिदान हो जाएँ - यूहन्ना 1:29; 3:14-16. इसलिए यदि हम मन बदलें और माफ़ी तथा शुद्धता चाहें, हमें मिलेगी। ईमानदार - व्यव. 32:4; भजन 9:16; 36:6; 89:14; 111:7 इन्साफ़ के आधार पर, वह माफ़ी देंगे। मसीह ने सब चुकता किया है, हमारे अपराधों के लिए दण्ड सहा। देखें 2:2; रोमि. 3:25-26.

"साफ़"- पद 7 प्रभु गुनाहों को माफ़ करते हैं हमेशा के लिए खतम कर देते हैं, हमारे विवेक को धोते हैं इब्रा. 9:14.

1:10 पद 8 वर्तमान के सम्बन्ध में है, लेकिन 10 पद पुराने समय के बारे में। बाईबल कहती है, सब ने पाप किया है (रोमि. 3:9-23)। यदि हम कहें, हम ने नहीं किया, हम बाईबल को झूठा ठहराते हैं।

2:1 मेरे छोटे बच्चो, उसने उन्हें अपने आत्मिक बच्चे कहा, तुलना करें। 1 तीमु. 1:2 ताकि तुम गुनाह में न पड़ो - यह हमारा लक्ष्य है। इसी को सामने रखना चाहिए। यह शब्द सभी विश्वासियों के लिए एक बड़ा अवसर लाता है। हालाँकि हम सभी के अन्दर बुरा स्वभाव है (1:8), हम परमेश्वर की कृपा और पवित्र आत्मा की मदद से इस पर जीत हासिल कर सकते हैं। हमें जानबूझकर चूक जाने और प्रलोभन में फँस जाने की ज़रूरत नहीं है। तुलना करें 1 कुरि. 10:13; 2 कुरि. 7:11 बुरा स्वभाव होने का मतलब यह नहीं है कि मसीही लोग गलत करें। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर ने उनके भीतर नए स्वभाव को भी रखा है (इफ़ि. 4:24)। यह भी कि परमेश्वर का आत्मा उनके अन्दर रहता है (1 कुरि. 6:19)।

पिता के साथ एक निष्कलंक वकील हैं।
2यीशु स्वयं ही हमारे अपराधों के लिए
प्रायश्चित हैं, सिर्फ़ हमारे ही नहीं लेकिन
सारी दुनिया के लोगों के लिए।
3इसी से हमें मालूम है कि हम यीशु को
जानते हैं, यदि हम उनकी आज्ञाओं को
मानते हैं। 4जो कहता है, "मैं यीशु को जान
गया हूँ और उनकी आज्ञाओं का पालन
नहीं करता, वह झूठा है और उसमें सच्चाई
नहीं है। 5लेकिन जो उनकी बात मानता

"निष्कलंक"- प्रे.काम 3:14; 7:52; 22:14; वह हमारे साथ एक वकील या मध्यस्थ होने के काम को इस तरह से नहीं करेंगे, जो सच्चाई और इन्साफ़ के उल्टा हो। वह विश्वासियों का पक्ष लेते हैं, जब वे गुनाह करते हैं, क्योंकि अपनी कुर्बानी कर के उन्हों ने हमारे गुनाहों को मिटा दिया है।

"वकील"- देखें रोमि. 8:34; 1 तीमु. 2:5; इब्रा. 7:25; रोमि. 5:9-10. यीशु स्वर्गिक वकील हैं। जब विश्वासी गुनाह करते हैं वह उनकी तरफ़ से होकर पिता के सामने इन की पैरवी करते हैं। शैतान हर दम हम पर आरोप लगाया करता है। (प्रका. 12:10) यीशु हमें बचाते हैं। यदि एक विश्वासी गुनाह करता है, क्या वह नाश हो जाता है? क्या वह मुक्ति खो देता है, क्या उसके लिए कोई आशा नहीं है? यह बाईबल की शिक्षा नहीं है - 1:9.

जब उनके पास बचाने के लिए ऐसा वकील है तो वे कैसे नाश हो सकते हैं या उद्धार खो सकते हैं? यह एक ऐसा वकील है, जो पूरे इन्साफ़ के साथ हमारे पक्ष में बोलता है, जो हमसे अनन्तकालीन प्रेम करता है। जिसने यह निर्णय किया है ताकि वह हमें हर गुनाह की सज़ा से बचाए। क्या हम उनकी सफ़लता के लिए शक कर सकते हैं?

2:2 "प्रायश्चित"- लोगों के गुनाहों को अपने ऊपर लेकर मसीह ने परमेश्वर के गुस्से को शान्त कर दिया है। बाईबल में इस शब्द का यही मतलब है। देखें रोमि. 3:25; इब्रा. 2:17; मत्ती 26:28; यूहन्ना 3:14-15; 1 कुरि. 15:3; 2 कुरि. 5:19,21; गल. 1:4; इफ़ि. 1:7; इब्रा. 9:12,18; 1 पतर. 2:24; 3:18.

"सारी...लिए"- 4:14; यूहन्ना 1:29; 2 कुरि. 5:14; 1 तीमु. 2:6; इब्रा. 2:9. लोग इसलिए बिना मुक्ति पाए नहीं हैं क्योंकि मसीह उनके लिए कुर्बान नहीं हुए हैं। वे इसलिए खोए हुए हैं क्योंकि वे इस कुर्बानी को कबूल नहीं करते है न ही विश्वास करते हैं। वे रोशनी के बजाए अँधेरे को पसंद करते हैं, पवित्रता की जगह गुनाह को पसंद करते हैं। यही उनका दण्ड है 2:3-6 हमें मालूम है पद 5; 3:14,19,24; 4:13; 5:13 यहाँ यूहन्ना परमेश्वर के बारे में जानने की बात नहीं कर रहा है, लेकिन परमेश्वर को जानने की बात कर रहा है। इस पत्र में 'जानना' मुख्य शब्द है। यह 33 बार आया है। इस पद में यूहन्ना उस ज्ञान की बात करता है जो सबूत पर निर्भर है। लोग सोच सकते हैं कि वे परमेश्वर को जानते हैं, जब कि नहीं जानते हैं। वे किसी भावनात्मक या अजीब अनुभव से धोखे में पड़ सकते हैं, ये धोखा देने वाले अनुभव हैं जो लोगों को गुमराह करते हैं। यिर्म. 17:9; इब्रा. 3:13; प्रका. 12:9 यूहन्ना यह ज़ोर डालता है कि जब तक हम अपने जीवन से सबूत नहीं दे सकते हैं हमें ढोंग नहीं करना चाहिए कि हम परमेश्वर को जानते हैं। परमेश्वर के सच्चे ज्ञान का असर दूसरों पर पड़ता है (यूहन्ना 17:3)। इस से उनका मन, विचार और व्यवहार बदलता है। यदि कोई बदलाव नहीं है, तो सच्चाई यह है कि परमेश्वर का कोई सच्चा ज्ञान नहीं है। ऐसे लोग हैं जो बड़े ज्ञान का दावा करते हैं, लेकिन क्या वे यीशु का कहना मानते हैं? यदि नहीं तो यह ज्ञान और अनुभव धोखे का है और बेकार भी। सबूत क्या है कि हम परमेश्वर को जानते हैं? कहना मानना (3) मन में प्रभु का प्रेम (5) ऐसा जीवन जो यीशु द्वारा दिए नमूने के अनुरूप है 16

2:3 "आज्ञाओं को मानते"- 3:24; 5:3; मत्ती 24:20; यूहन्ना 14:15,23; प्रे.काम 4:19; 5:29; रोमि. 6:16; 16:26; इब्रा. 5:9 सच्चे विश्वासी यीशु को मुक्तिदाता के साथ स्वामी भी कबूल करते हैं। (प्रे.काम 22:10 के नोट्स)

2:4 "झूठा"- पद 8; 4:20; यूहन्ना 8:44.

"उसमें"- यूहन्ना 17:21-23; रोमि. 6:3-4; 1 कुरि. 12:13; इफ़ि. 1:1,3.

है, उसी में परमेश्वर के प्रेम का सबूत दिखता है, इसी से हम जान पाते हैं कि हम यीशु में हैं।

6जो कहता है कि मैं यीशु में हूँ, उसका जीवन वैसा ही होना चाहिए, जैसा यीशु का था।

7भाइयो बहनो, मैं तुम्हें कोई नयी आज्ञा नहीं दे रहा हूँ, लेकिन वही पुरानी आज्ञा जो तुम्हें शुरू में दी गयी थी। पुरानी आज्ञा वही परमेश्वर का वचन है जो तुम ने शुरू से सुना था।

8मैं फिर से तुम्हें एक नयी आज्ञा दे रहा हूँ, यह यीशु और तुम में सच है क्योंकि अँधेरा खत्म हो रहा है और सच्ची रोशनी पहले ही से चमक रही है। 9जो कहता है कि वह रोशनी में है और अपने भाई से घृणा करता है, वह अभी तक अँधेरे में है। 10जो अपने भाई से प्रेम रखता है, उसका जीवन रोशनी में है, इसलिए उसमें ठोकर का कोई कारण नहीं है। 11लेकिन जो अपने भाई से घृणा करता है वह अँधेरे में है और अंधकारमय जीवन जी रहा है, उसे मालूम ही नहीं कि वह किस दिशा में जा रहा है, क्योंकि उस अँधेरे ने उसकी आँखों को अँधा बना दिया है।

12छोटे बच्चो, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि यीशु मसीह की वजह से हमारे अपराध माफ़ हो चुके हैं।

13हे पिताओ, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि जो शुरुआत से हैं, उन्हें तुम ने

2:5 "प्रेम"- 4:7-8 - यह दूसरा मुख्य शब्द इस पत्र में है। असली प्रेम आज्ञाकारिता में ही दिखता है। शेष जो कुछ दिखता है, मात्न भावना और धोखा है (यूहन्ना 14:15) मन में बोयी गयी सच्चाई, प्रेम और आज्ञाकारिता में ही दिखती है।

2:6 "जैसा यीशु का था"- देखें 1 पतर. 2:21; इफ़ि. 5:1; 1 थिस्स. 1:6.

2:7 "सुना था"- 1:1-3 संदेश यह है कि मसीह कौन हैं, वह क्या हैं। वह क्या चाहते हैं कि हम बनें और करें। देखें 3:23 यूहन्ना कुछ अजीब नयी बात नहीं कह रहा था, जो उसने खुद बनायी थी (2 पतर. 1:16 से तुलना करें)

2:8 "नयी"- पुरानी आज्ञा की तरह लेकिन फिर से ज़ोर डाला गया और नयी शक्ल में पेश की गयी।

"चमक रही है"- यीशु के आने से पहले दुनिया में भारी आत्मिक अँधेरा सब जगह था (यशा. 60:2)। वह रोशनी की तरह आए (यूहन्ना 8:12) अपने शिष्यों को रोशनी की तरह भेजा (मत्ती 5:14) और खुशी की खबर से लोगों को रोशनी देते हैं। यह इस्त्राएल में चमकने लगी, लेकिन यूहन्ना के समय में पूरे रोमी साम्राज्य में चमकने लगी। अब संसार में सारे देशों में चमकती है।

2:9-11 हम अँधेरे में हैं या रोशनी में, प्रेम ही इस बात का सबूत है। लोग बहुत कुछ सोच सकते हैं और कर सकते हैं। वे अपने आपको और दूसरों को धोखा दे सकते हैं। लेकिन हम उनके बर्ताव से जान सकते हैं कि वे क्या हैं। प्रेम और रोशनी साथ-साथ चलते हैं और नफ़रत व अँधेरा साथ-साथ।

"भाई"- शायद मतलब है दूसरा मसीही। यूहन्ना यह नहीं कहता कि मसीही, गैर मसीहियों से नफ़रत कर सकते हैं। देख मत्ती 5:44; यदि हमारे मन में स्वर्गिक प्रेम है, हम सब से प्रेम करेंगे, हालाँकि अपने लोगों (विश्वासियों) से ज्यादा।

2:10 "ठोकर...कारण"- (पद 10) शायद इसका अर्थ होगा, कि उसके जीवन में कुछ ठोकर का कारण नहीं होगा। हमारे अन्दर मसीह का प्रेम हमें ऐसा बनाएगा कि जो दूसरों के लिए ठोकर का कारण नहीं बन सके। मसीहियों में प्रेम की कमी दूसरों के लिए एक बड़ा रोड़ा है। देखें रोमि. 14:13; 1 कुरि. 8:9; 10:32; 2 कुरि. 6:3.

2:11 "किस दिशा में जा रहा है"- यूहन्ना 12:35; नीति. 4:19.

"अँधेरे"- तुलना करें 2 कुरि. 4:4

2:12 "यीशु मसीह की वजह से"- यीशु क्या हैं और उन्हों ने क्या किया है, उसकी वजह से माफ़ी मिली है। इसलिए कि हम ने यीशु के सम्बन्ध में परमेश्वर के प्रकाश को अपनाया है और वह चाहते हैं कि हमें माफ़ी मिले।

"माफ़ हो चुके हैं"- 1:7,9.

2:13 "जो आरम्भ से हैं"- 1:1 यह यीशु की तरफ़ इशारा है।

जान लिया है। जवानो, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुम ने दुष्ट (शैतान) पर जीत हासिल कर ली है। छोटे बच्चो, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ, क्योंकि तुम ने पिता को जान लिया है।

14पिता लोगो, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि जो शुरू से हैं, उन्हें तुम ने जान लिया है। नौजवानो, मैं तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि तुम लोग मज़बूत हो, और परमेश्वर की बातें, तुम में बनी रहती हैं और तुम ने दुष्ट (शैतान) को जीत लिया है।

15इस दुनिया से लगाव मत रखो न ही इस की चीज़ों से। अगर कोई दुनिया से लगाव रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। 16जो कुछ भी इस दुनिया में है - पुराने स्वभाव की चाहत, आँखों की अभिलाषा और ज़िन्दगी (जीविका) का घमण्ड, पिता की ओर से नहीं है, लेकिन इस संसार की ओर से है। 17यह दुनिया भी खत्म हो रही है और उसकी अभिलाषाएँ भी, लेकिन जो कोई परमेश्वर की इच्छा को पूरी करता है, वह बना रहेगा।

"जान लिया"- पद 3; यूहन्ना 17:3; 2 कुरि. 4:6; मत्ती 11:27.

"जीत हासिल"- देखें 4:4; 5:4; प्रका. 2:7; 12:11; 21:7 दुष्ट ही शैतान है। लोग इस पर जीत तब पाते हैं, जब वे मन बदलाव करते हैं, मसीह पर भरोसा रखकर सही जीवन जीना आरम्भ करते हैं।

"पिता"- पद 1, मत्ती 5:16.

2:14 "मज़बूत"- उनके पास ताकतवर शरीर के साथ परमेश्वर की बातों का ज्ञान और परमेश्वर द्वारा दी गयी सामर्थ है, जिससे शैतान पर विजय मिलती है। परमेश्वर की बातें - पद 24,27; यूहन्ना 15:7; भजन 119:11; कुल. 3:16.

2:15 अब यूहन्ना सब से बिनती करता है और आशा भी देता है।

"दुनिया"- 3:1,13; 4:5; 5:19 इस चिट्ठी में यह दूसरा कुंजी शब्द है और 20 बार आता है। इसका मतलब है एक ऐसा क्रम जिसे बिना परमेश्वर के मनुष्य ही ने बनाया है। मनुष्य के बुरे स्वभाव से ही समाज, विचार, धर्म, जीने के तरीके, आदि बने हैं। बाईबल के आधार पर यह दुनिया परमेश्वर को नहीं जानती है। (यूहन्ना 14:17; 15:21)। यह दुनिया नहीं जानती कि विश्वासी क्या है (1 यूहन्ना 3:1)। यीशु और उनके मानने वालों से यह नफ़रत करती है (3:13; यूहन्ना 15:18,24)। यह शैतान के वश में है (5:19; इफ़ि. 2:1-2) प्रभु ने विश्वासियों को इस दुनिया से निकाला है ताकि वे प्रभु के खास लोग बनें (यूहन्ना 15:19; 17:6,14,16) ये सभी कारण हैं कि वे संसार से प्रेम नहीं रखते।

"अगर..."- जो कुछ सच्चे परमेश्वर चाहते हैं, उन सब के खिलाफ़ में दुनिया है। इसलिए 'संसार से प्रेम' यह दिखाता है कि हमारे पास परमेश्वर के लिए प्रेम कम है। फिर उन मसीही लोगों के बारे में क्या कहा जाए जो दुनिया की चीज़ों के पीछे दौड़ते हैं और उसकी नकल करने के साथ उन चीजों के लिए लालायित रहते हैं? वे न परमेश्वर को न उनके प्रेम को जानते है।

2:16 "जो कुछ भी"- इस गिरी हुयी दुनिया में कुछ भी ऐसा नहीं है, जो विश्वासी के प्रेम के लायक है। ऐसी इच्छाएँ जो इन्सान के बुरे स्वभाव से निकलती हैं, ऐसे इच्छाएँ देखने में आती हैं, घमण्ड से आती हैं - यही चीजें दुनिया में हैं - तुलना करें उत्पत्ति 4:21; मत्ती 15:19; रोमि. 1:28-32. इसलिए हम दुनिया के समान न बनें।

"पुराने स्वभाव"- रोमि. 7:5 के नोट्स देखें।

2:17 खतम हो जाएँगी - परमेश्वर संसार का इन्साफ़ करेंगे, सज़ा देंगे और हमेशा के लिए अलग कर देंगे (प्रे.काम 17:31; यशा. 24:1-13; 2 पतर. 3:10-13)।

"परमेश्वर...पूरी"- मत्ती 7:21 फिर देखें कार्य के ऊपर यूहन्ना का ज़ोर, मात्र विश्वास पर नहीं। हालाँकि उसे अच्छी तरह मालूम था कि हम कृपा और विश्वास से बचते हैं। तुलना करें याकूब 2:14-26. सच्चा विश्वास किसी की भी ज़िन्दगी में बदलाव लाता है जिससे प्रभु की आज्ञाकारिता का मन बनता है। देखें प्रे.काम 22:10 के नोट्स। यह प्रभु चाहते हैं कि हम विश्वास लाएँ, अपना स्वामी और उद्धारकर्ता स्वीकारें। वे ही हैं जो परमेश्वर के साथ हमेशा होंगे। दूसरे सभी "दूसरी मौत" (प्रका. 20:14-15) का अनुभव करेंगे।

18छोटे बच्चो, आखिरी समय आ चुका
है और जैसा तुम ने सुना था कि मसीह
विरोधी आएगा, वह सच था, क्योंकि
मसीही विरोधी अभी भी बहुत से हैं। इसी
से हम जान पाते हैं, कि ये आखिरी समय
है। 19वे हम में से निकल गए, लेकिन उन
में से कोई भी हम में का नहीं था। क्योंकि
यदि वे हम में के होते, बेशक वे हमारे साथ
ही रहे होते। लेकिन वे हम में से निकल
गए, ताकि यह मालूम हो जाए कि वे सभी
हम में के नहीं थे।

20तुम्हारे पास उस पवित्र की तरफ़ से
अभिषेक है और तुम सब कुछ जानते हो
21मैंने तुम्हें इसलिए नहीं लिखा, क्योंकि
तुम सच्चाई जानते नहीं हो, लेकिन इसलिए
कि जानते हो, और कोई भी झूठ, सच
में से नहीं निकलता है। 22झूठा है कौन?
वही जो इस बात का इन्कार करता है
कि यीशु छुड़ाने वाले हैं। जो पिता और
बेटे को नहीं मानता, वही मसीह विरोधी
है। 23जो बेटे को नहीं मानता उसके पास
पिता नहीं, लेकिन जो बेटे को मान लेता
है, उसके पास पिता भी है।

24इसलिए, जो तुम ने आरम्भ से सुना है,
उसे अपने भीतर बना कर रखो। जो तुम ने
शुरूआत से सुना है, यदि तुम में बना रहे,
तब तुम भी पुत्र और पिता में बने रहोगे।

25और जो वायदा उन्हों ने किया है, वह

2:18 "आखिरी समय"- प्रे.काम 2:17; रोमि. 13:11-12; याकूब 5:3; 1 पतर. 1:20; प्रका. 1:3 से तुलना करें। हम आखिरी समय में हैं तुलना कीजिए 2 पतर. 3:8

"मसीह विरोधी"- पद 22; 4:3; 2 यूहन्ना 7; 2 थिस्स. 2:3-4. मसीह विरोधी, यीशु का विरोध करेगा। वह निश्चित रूप से परमेश्वर होने का दावा करेगा।

"बहुत"- तुलना करें मत्ती 24:4-5; 2 कुरि. 11:13-15.

2:19 "हम में से"- प्रे.काम 20:30. यीशु के विरोधी यीशु के अनुयायी होने का दावा करेंगे।

"हम में के"- वे सच्चे विश्वासी नहीं थे। उनका निकल जाना सिद्ध करता है कि सभी मसीह के नहीं थे। प्रभु के चुने हुए विश्वास में बने रहेंगे। (इब्रा. 10:39; यूहन्ना 6:67-68)

2:20 "पवित्र"- मरकुस 1:24; प्रे.काम 2:27; 3:14.

"अभिषेक"- तुलना करें 2 कुरि. 1:21-22 यह अभिषेक परमेश्वरीय आत्मा का ईनाम है 3:24. यही परमेश्वर के सेवक होने का एक सबूत है। 'मसीह' का मतलब है 'अभिषिक्त' मत्ती 1:1, विश्वासियों के पास यह अभिषेक होने की वजह से वे मसीह विरोधियों का पहचान सकते हैं। वे उनकी शिक्षा और बर्ताव से पहचान लेंगे कि वे यीशु की सेवा करने वाले नहीं हैं।

"सब कुछ जानते हो"- यूहन्ना का मतलब यह नहीं था कि ये विश्वासी सब कुछ जानते थे, जो कुछ जाना जा सकता था। उसने जान लिया कि सिर्फ़ प्रभु इस तरह से जानते हैं। जिनको वह लिख रहा था उनके पास पवित्र आत्मा था और उन्हें सच्चाई सिखायी गयी थी। उन्हें मालूम था कि वह जो कुछ लिख रहा था वह सब सच था। हम जिनके पास बाईबल है और परमेश्वरीय आत्मा है हमें भी सब सही आत्मिक ज्ञान मिल सकता है।

2:21 पद 13 कुछ भी जो बाईबल में सिखाया गया है, उस से हटना खतरनाक है।

2:22 जो व्यक्ति कहता है कि यीशु अभिषिक्त नहीं है, परमेश्वर नहीं हैं, झूठा है और शायद सब से बड़ा झूठा। कुछ लोग ऐसा करते हैं। वे इस बात का विरोध करते हैं कि यीशु में परमेश्वर और मनुष्य का स्वभाव है। यह भी कि यीशु परमेश्वर हैं जो मनुष्य रूप में आए। तुलना करें यूहन्ना 5:23 देखें पद जो यीशु के परमेश्वर होने के बारे में हैं फ़िलि. 2:6; लूका 2:11.

2:23 लोग कुछ भी क्यों न कहें, जो यीशु को परमेश्वर की तरह नहीं अपनाता, उसके पास परमेश्वर है ही नहीं। यह गलती है अगर हम सोचें कि यीशु को महत्व न दें, लेकिन परमेश्वर को अपनाएँ। जो यीशु पर विश्वास लाते हैं, उनके पास परमेश्वर पिता भी हैं।

2:24 "सुना"- 1:1; 2:7.

"यदि"- इब्रा. 3:6,14; कुल. 1:23; 1 कुरि. 15:2.

"बना रहे"- यूहन्ना 15:4-5,7,9,10.

सदा काल का जीवन है।

26मैंने तुम्हें ये बातें उन लोगों के बारे में
लिखी हैं, जो तुम्हें गुमराह करते हैं 27लेकिन
तुम ने जो अभिषेक उन से पाया है तुम में
बना है। इस बात की ज़रूरत नहीं कि कोई
इन्सान तुम्हें सिखाए। जिस तरह से तुम्हारे
भीतर का अभिषेक सभी विषयों पर तुम्हें
सिखाता है, यह सच्चाई है और झूठ नहीं
है। जो कुछ इस अभिषेक से तुम ने सीखा
है, वैसा ही करते रहो।

28अब छोटे बच्चो, यीशु में बने रहो,
ताकि जब वह प्रगट हों, हमें भरोसा हो
और उन के आने पर उनके सामने शर्मिन्दा
न होना पड़े।

29यदि तुम्हें मालूम है कि वह निर्दोष और
सच्चे हैं तो यह भी सच है कि हर एक जो
सही जीवन जीता है उन से पैदा हुआ है।

3 देखो, पिता ने कैसा प्रेम हम पर
उण्डेला है, कि हम परमेश्वर के बेटे
बेटियाँ कहलाएँ, इसलिये दुनिया हमें नहीं
पहचानती है क्योंकि उसने परमेश्वर को

2:25 "सदा काल का जीवन"- 5:11; तीतुस 1:2; यूहन्ना 3:16; 6:47.

2:26 "गुमराह"- 3:7; मत्ती 24:4,14; 2 कुरि. 11:3; प्रका. 12:9. इस तरह के संसार में हम रहते हैं - यदि हम यीशु पर ईमान लाएँ, शैतान और उसके दूत (साथी) भरसक कोशिश करेंगे कि हम सच्चे विश्वास से भटक जाएँ।

2:27 "बना है"- पवित्र आत्मा विश्वासियों को छोड़ नहीं देता है (यूहन्ना 14:16; इफ़ि. 1:13-14)।

"सिखाए"- उन लोगों को मसीह विरोधी और झूठे शिक्षकों के बारे में सिखाया जा चुका था - यही संदर्भ है यहाँ। परमेश्वर का आत्मा उनके भीतर था ताकि जो उन्हों ने सीखा था, उसे समझें। इस बात की उन्हें ज़रूरत नहीं थी कि प्रेरित उन्हें नयी बातें सिखाएँ। उन्हें झूठे शिक्षकों की भी ज़रूरत नहीं थी, जो अपने पास नयी सच्चाई का दावा करते थे।

यूहन्ना चर्च में शिक्षकों की ज़रूरत से इन्कार नहीं कर रहा था। परमेश्वर खुद ही उन्हें नियुक्त करते हैं (इफ़ि. 4:11; 1 कुरि. 12:28) और यूहन्ना भी उन में से एक था। जिन लोगों को यूहन्ना लिख रहा है उन्हें सिखाया गया था और सत्य को जानते थे। हम में से हर एक को चाहे हम अपने ज्ञान का कितना दावा करें, सच्चे शिक्षकों से सीखने से हिचकिचाना नहीं चाहिए।

"अभिषेक...सिखाता है"- परमेश्वर की आत्मा की मदद से हम आत्मिक सच्चाईयों को सीखते हैं। इन्हें किसी और तरह से नहीं सीखा जा सकता है। 1 कुरि. 2:10-14; यशा. 59:13; भजन 25:4-5 से मिलाएँ। शिक्षक हमारे भीतर है - रोमि. 8:9,15,16.

2:28 बने रहो - पद24

"प्रगट"- 3:2; मत्ती 24:30; कुल. 3:4; 1 तीमु. 6:14; तीतुस 2:13; इब्रा. 9:28.

"शर्मिंदा न होना"- बिना शर्म के, तभी रहा जा सकता है, जब उन्हें खुश करने का जीवन हमारा है। यह उन में बने रहने से संभव है - यूहन्ना 15:4-5.

2:29 "निर्दोष और सच्चे"- इन्सान के काम से मालूम हो जाता है कि इन्सान है क्या (मत्ती 7:15-20)। सही करने के सम्बन्ध में नोट्स। मत्ती 7:21; रोमि. 6:16-18; 8:4 आदि।

"पैदा हुआ है"- यूहन्ना 3:3-8; याकूब 1:18; 1 पतर. 1:23.

3:1 "पिता"- मत्ती 5:16 के नोट्स।

"कैसा प्रेम"- 4:8-10; यूहन्ना 3:16; रोमि. 5:8; इफ़ि. 1:4; 2:4. हम सिर्फ़ नरक के लायक हैं। यह परमेश्वर का प्रेम है, जिसकी वजह से उन्हों ने हम जैसे गुनाहगारों को लेकर अपनी संतान बना दिया है।

"दुनिया"- हमें नहीं पहचानती है - यूहन्ना 15:21; 16:3. इसलिए कि विश्वासी नए लोग हैं, मसीह में हैं, जिस तरह से वे मसीह को नहीं जानते, वे उन्हें भी नहीं जानते हैं। जिस तरह से मसीह इस दुनिया के नहीं थे वे भी नहीं हैं (यूहन्ना 17:14,16)। दुनिया उनके स्वभाव, नीयत, विश्वास या और किसी बात को जिसे सृष्टिकर्ता परमेश्वर ने उनके मन में रखा है, नहीं जानती है।

नहीं पहचाना है। 2प्रियो, अभी हम परमेश्वर के बेटे-बेटियाँ हैं, अभी यह नहीं पता है कि हम भविष्य में क्या होंगे, लेकिन हमें इतना मालूम है कि जब यीशु आएँगे, हम उनकी तरह होंगे, क्योंकि हम यीशु को वैसा ही देखेंगे जैसे वह हैं। 3हर एक जिसके पास यह आशा है, वह अपने आपको वैसा ही पवित्र करता है, जैसा यीशु पवित्र हैं।

4जो कोई उचित करने से चूक जाता है, वह व्यवस्था (परमेश्वर के मापदण्ड) को तोड़ता है, क्योंकि चूक जाना (बलवा करना) व्यवस्था के ख़िलाफ़ जाना है। 5तुम्हें मालूम है कि यीशु इसलिए आए ताकि गुनाहों (पापों) को उठा ले जाएँ और उन में कोई पाप नहीं है। 6जो कोई उन में बना रहता है, वह गुनाह करना जारी नहीं रखता है। जो गुनाह करना जारी रखता है उसने न तो यीशु को देखा है और न जाना है।

3:2 "परमेश्वर के बेटे बेटियाँ"- यूहन्ना 1:12-13; रोमि. 8:16-17; फ़िलि. 2:15; इब्रा. 2:13; 1 पतर. 1:14. हर एक परमेश्वर की संतान नहीं है - सिर्फ़ वह जिसने यीशु मसीह को कबूल किया है।

"क्या होंगे"- अनन्त काल तक परमेश्वर की संतान के रूप में हम क्या होंगे, अभी तक हमें नहीं मालूम।

"जब यीशु आएँगे"- 2:28.

"हम उनकी तरह होंगे"- देखे रोमि. 8:29. किसी भी इन्सान के लिए अपेक्षित सब से बड़ा लक्ष्य यही हो सकता है। जब विश्वासी यीशु को देखेंगे, वे हमेशा के लिए यीशु की समानता में बदल जाएँगे (1 कुरि. 15:48-54)।

"वैसा...हैं"- मत्ती 5:8; 1 कुरि. 13:12; प्रका. 22:4.

3:3 जो लोग यीशु के आने पर उन्हीं की तरह होगे, वे अभी धरती पर भी यीशु की तरह बनना चाहेंगे। यीशु की तरह बनना चाहेंगे। यीशु की तरह बनने की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है (2 कुरि. 3:18; कुल. 3:9-10) सच्चे विश्वासी, शुद्धिकरण की इस प्रक्रिया में परमेश्वर का सहयोग देंगे। तुलना करें इब्रा. 12:14.

"पवित्र करता है"- 1:7,9; 2 कुरि. 7:11 इस रोशनी (पारदर्शी) जीवन बिताने से ही अपने जीवन को शुद्ध कर सकते हैं।

3:4 परमेश्वरीय इच्छा के ख़िलाफ़ और गलत सही की शिक्षा के ख़िलाफ़ जाना गुनाह करना है। यह तो इस तरह है कि परमेश्वरीय नियम आदि हैं नहीं, या सही चालचलन की कोई रूपरेखा ही नहीं है। यह मनुष्य की स्वार्थी इच्छाओं का जीवन है।

3:5 "गुनाहों...जाएँ"- यूहन्ना 1:29; रोमि. 11:27; इब्रा. 9:28; 10:11,15,17.

"कोई पाप नहीं"- इब्रा. 4:15; 7:26 यह सिर्फ़ यीशु मसीह के लिए कहा जा सकता है। यूहन्ना पहले ही कह चुका है कि शिष्य इस तरह का दावा नहीं कर सकते हैं। 1:8

3:6 हर जन या तो मसीह में है या बुराई में। जो मसीह में नहीं है, बुराई में जीते हैं। जो मसीह में हैं वे ऐसा नहीं कर सकते हैं, वे नए तरीके से पैदा हुए हैं (2:29)। वे सच्चे परमेश्वर की संतान हैं इसलिए, उन्हीं का स्वभाव उनके पास है (3:1)। परमेश्वर का आत्मा उन में रहता है 4:13. जैसा जीवन उनका पहले का, वैसा वे नहीं जी सकते इफ़ि. 2:1-3. शिष्य गुनाह में गिरते हैं 1:7; 2:1; 5:16, लेकिन पाप की ज़िन्दगी में वे रह नहीं सकते (नीति. 25:16)। यदि वे करते हैं, उनका नया स्वभाव बुराई के ख़िलाफ़ विद्रोह करता है और उसे छोड़ देने के लिए कायल करता है। मसीह यह प्रार्थना करते हैं कि दुष्टता में से निकल जाएँ, (लूका 22:31-32; यूहन्ना 17:17; इब्रा. 7:25) और पवित्र आत्मा उन्हें बताता है कि वे उस रास्ते को छोड़ें।

यदि मसीही होने का लोग दावा करते हैं और बुराई में रहते हैं, यह दिखाता है कि न तो वे नए सिरे से जन्मे हैं और न ही मसीह की भेड़ हैं। परमेश्वर की सन्तान में और शैतान की सन्तान में बिल्कुल फ़र्क है। यह उनके चालचलन से दिखता है।

"गुनाह करना जारी नहीं रखता"- यूनानी शब्द वर्तमान काल में है। इसका मतलब है कि वह गुनाह की जीवन शैली को नहीं अपनाता। इसका मतलब पाप रहित होना नहीं है। 1:9; 2:1

7छोटे बच्चो, तुम्हें कोई धोखे में न रखे। मुक्ति पाया हुआ इन्सान ही ऐसा सही जीवन जीता है, जिस तरह का जीवन यीशु का है। 8जो गुनाह करता रहता है, वह शैतान से है। क्योंकि शैतान शुरू से गुनाह करता आया है। परमेश्वर के बेटे (यीशु) इसलिए आए, ताकि वह शैतान के कामों को बर्बाद कर डालें। 9जो कोई परमेश्वर से पैदा हुआ है, वह गुनाह करना जारी नहीं रखता, क्योंकि उनका बीज उसमें बना रहता है और वह गुनाह में बना नहीं रह सकता, क्योंकि वह परमेश्वर से पैदा हुआ है। 10इसी बात से परमेश्वर की संतान और शैतान की संतान के बीच अन्तर देखा जा सकता है। जो सही चाल चलन को बनाकर नहीं रखता है, वह परमेश्वर से नहीं है, न ही वह जो अपने भाई-बहन से प्रेम नहीं करता है।

11जो संदेश तुम ने शुरूआत से सुना है, वह यही है, कि हम एक दूसरे से स्नेह रखें। 12हम कैन की तरह न बनें, जो उस दुष्ट से था जिसने अपने भाई का खून कर डाला। उसने अपने भाई का खून क्यों किया? क्योंकि उसके काम बुरे थे और उसके भाई के काम अच्छे।

3:7 "तुम्हें कोई धोखे में न रखे"- 2:26; 1 कुरि. 3:7-8; गल. 6:7; इफ़ि. 5:6. लोगों के लिए दो तरह के जीवन हैं - गुनाह का जीवन और सही जीवन। हर एक जन इन दो में से एक दायरे में है तुलना करें मत्ती 7:13-14; रोमि. 2:6-10. इसका मतलब यह नहीं कि निर्दोष (गुनाह की माफ़ी पाया हुआ) व्यक्ति गुनाह नहीं करता (1:7,9; 2:1; याकूब 3:2 आदि) या जैसा एक माफ़ी न पाया हुआ व्यक्ति कुछ अच्छा नहीं करता। यूहन्ना एक व्यक्ति के जीवन के पूरे जीवन चक्र (जीवन शैली) के बारे में कह रहा है। माफ़ी पाए हुए व्यक्ति के जीवन में सही करना हमेशा सामने रहता है। एक गुनाहगार के जीवन में बुरा करना राज्य करता है। धर्मी (सिद्ध) 2:29.

3:8 "शैतान"- मत्ती 4:1; इफ़ि. 2:2; हर इन्सान या तो शैतान का है या परमेश्वर का (पद 10) देखें यूहन्ना 8:44 यदि परमेश्वर हमारे जीवन को नियंत्रण नहीं करते हैं, तो शैतान करता है।

"शुरू से"- शैतान, शुरूआती दुष्ट था।

"शैतान के कामों को बर्बाद"- शैतान का काम गुनाह और मौत है। यीशु मसीह अपने लोगों में इन दोनों को नाश करने आए। उनके बुरे कामों के लिए मरने और फिर से जी उठने के लिए, यीशु मसीह ने इस बर्बादी की और शैतान के नाश की नींव डाली।

3:9 "पैदा हुआ है"- यूहन्ना 3:3-7.

"गुनाह करना जारी नहीं रखता"- पद 6

"उनका बीज"- परमेश्वरीय बीज, आत्मिक बीज से, आत्मिक जीवन देता है (1 कुरि. 9:11)। यह बीज बाईबल है (याकूब 1:18; 1 पतर. 1:23; मत्ती 13:3,23; लूका 8:15)। यह लोगों के मन में बोया जाता है। यह प्रस्फुटित होता है और नया स्वभाव उत्पन्न करता है।

"बना रहता है"- विश्वासियों को यह डर नहीं होना चाहिए कि उनके मन में बोया बीज मर जाएगा या शैतान चुरा लेगा। यह बना रहेगा और प्रेम अपने उस काम को जो उन्हों ने शुरू किया है जारी रखेंगे। (फ़िलि. 1:6; 2:13)

3:10 यूहन्ना कह रहा है कि हर इन्सान या तो परमेश्वर की संतान है या शैतान की (यूहन्ना 8:44; मत्ती 13:38)। एक व्यक्ति क्या करता है या क्या नहीं करता है, उस से हम बता सकते हैं कि वह क्या है (मत्ती 7:15-20)।

"सही चाल चलन"- उचित करना वह है जिसे बाईबल करने के लिए सिखाती है वह सब नहीं जिसे लोग करने को कहते हैं। (तुलना करें यूहन्ना 16:2) जो लोग उचित काम नहीं कर रहे हैं, गलत कर रहे हैं, चाहे वे महसूस करें या नहीं। यदि वे सही करने का अभ्यास न करेंगे तो ज़ाहिर है कि वे शैतान की सन्तान हैं, परमेश्वर की नहीं।

"भाई-बहन से प्रेम"- इसकी आज्ञा यीशु ने दी थी। "भाई" - एक यीशु को मानने वाला या खून के रिश्ते वाला हो सकता है (जैसा कि पद 12 में है)

3:11 यूहन्ना 13:34; 15:12,17.

3:12 "कैन"- उत्पत्ति 4:1-8; इब्रा. 11:4; यहूदा 11. कैन शैतान की तरफ़ से था (पद 10)। हाबिल परमेश्वर का पुत्र था क्योंकि उसने वही किया जो परमेश्वर ने कहा (इब्रा. 11:4)

13मेरे भाइयो-बहनो, यदि दुनिया तुम से
नफ़रत करती है, तो अचम्भा न करना।
14हम जानते हैं कि हम मौत से गुज़र कर
ज़िन्दगी में दाखिल हो चुके हैं, क्योंकि हम
भाइयों से प्रेम करते हैं जो अपने भाई से प्रेम
नहीं करता वह मौत की दशा में रहता है।
15जो अपने भाई से नफ़रत करता है, वह
हत्यारा है और तुम्हें मालूम है कि किसी
भी हत्यारे में सदा का जीवन (परमेश्वरीय
जीवन) नहीं रह सकता।

16इसी से हम परमेश्वर के प्रेम को जानते
हैं, क्योंकि उन्हों ने अपने जीवन को हमारे
लिए कुर्बान कर दिया। हमें भी अपना
जीवन अपने भाइयो-बहनों के लिए देना
चाहिए। 17लेकिन जिस किसी के पास इस
दुनिया की चीज़ें हैं, और वह अपने भाई को
ज़रूरत में देखने के बावजूद अपने मन को,
सख्त कर लेता है, तो परमेश्वर का प्रेम
(या अगापे) उसके अंदर कैसे रह सकता
है? 18मेरे छोटे बच्चो, हमारा प्रेम शब्द का
नहीं, लेकिन काम में और सच्चाई में दिखे।
19उसी से हम जान जाते हैं, कि हम सत्य
के हैं और यीशु के सामने अपने मनों को
आश्वासन दे सकते हैं। 20इसलिए कि यदि
हमारा मन (विवेक) हमें दोषी ठहराए, तो
परमेश्वर हमारे मन से बढ़कर हैं और सब

3:13 यूहन्ना 15:18-21 कैन ऐसे लोगों का नमूना है, जो परमेश्वर के लोगों से घृणा करते हैं।

3:14 "मौत"- आत्मिक मौत (इफ़ि. 2:1) ऐसा मन जिसमें प्रेम न हो, इस बात का खास सबूत है। परमेश्वर जो प्रेम हैं वह विश्वासियों के मन में बसते हैं और प्रेम करने में मदद करते हैं।

3:14 "मौत...दाखिल"- देखें यूहन्ना 5:24. जिन्होंने इसे अनुभव किया है, उन में क्या इसका सबूत क्या होगा? दूसरे मसीहियों से प्रेम-तुलना करें पद 19; 2:3.

3:15 नफ़रत, खून करने की तरह है, क्योंकि यदि अवसर मिले तो नफ़रत करने वाला खून कर डालेगा प्रभु हमारे भीतर की हालत और हमारे काम दोनों ही को देखते हैं। तुलना मत्ती 5:27-30.

"हत्यारे"- एक हत्यारा मुआफ़ी हासिल कर सकता है यदि गुनाहों को कबूल करता है (मनबदलाव या पश्चाताप्) और यीशु पर भरोसा करता है। तब वह नफ़रत करना बंद कर देगा और किए गए खून की क्षमा मिल जाएगी।

3:16 "इसी से हम...जानते है"- यीशु की तरफ़ इशारा कर के यूहन्ना दिखाता है, कि यीशु प्रेम हैं। वह यह भी सिखाता है कि प्रेम करना क्या है। देखें रोमि. 5:8; गल. 2:20; यूहन्ना 3:16; 10:11,15. विश्वासियों को दूसरे विश्वासियों के लिए जान देने तक तैयार होना चाहिए। यही स्तर परमेश्वर दिखाते और सिखाते हैं। अफ़सोस की बात है कि बहुत से अच्छे मसीही कहलाने वाले लोग दूसरों की मदद करने से पीछे हटते हैं।

3:17-18 याकूब 2:14,17 से मिलाएँ। बिना काम वाला विश्वास बेकार है। जो प्रेम अच्छे कामों में प्रगट नहीं होता है, वह प्रेम नहीं है। वह धोखे वाला और बेकार का है। जब यीशु लोगों का इन्साफ़ करने आएँगे, उस समय देखा यह जाएगा कि लोगों ने क्या किया है या क्या नहीं किया है। सहानुभूति की भावनाओं और मीठे शब्दों के आधार पर न्याय नहीं होगा देखें मत्ती 25:31-46, (पद 41-46 का खास मतलब है यूहन्ना के शब्दों के प्रकाश में) इस में शक नहीं कि जो लोग सचमुच का प्यार दूसरों के लिए दिखाते हैं, उसमें उनका अपना स्वार्थ नहीं होता है। वे मदद सिर्फ़ इसलिए करते हैं, ताकि खुद मदद पा सकें। 2 कुरि. 9:15 के नोट्स और पद।

3:19 पद 14 अगर हम जानते हैं कि हम अपने संगी विश्वासी से इसलिए प्रेम करते हैं, क्योंकि हम ने अपने प्रेम को मदद देने से दिखाया है, तो यह सच्चाई हमें यह ज्ञान देती है कि हम परमेश्वर की सच्चाई से सही तरीके से जुड़े हुए हैं। और परमेश्वर की उपस्थिति में हमें आराम है। शायद जो लोग उद्धार की निश्चयता को नहीं जानते हैं, उसका एक कारण यही है। उन्हों ने अपने कामों से अपने प्रेम को नहीं दिखाया है।

3:20 "दोषी"- कभी-कभी विश्वासियों का मन उन्हें दोषी ठहराता है। ऐसा गलत करने की वजह से हो सकता है (1:9; 2:1) या उन्हें याद आती है कि उनका प्रेम कितना कम है। आत्मा के फल कितने कम हैं। उन्हें जो करना चाहिए, उसमें वे असफल हुए हैं। लेकिन यदि हम प्रेम करते हैं और कामों के द्वारा दिखाया है, तो हमें मन में शान्ति मिल सकती है।

कुछ जानते हैं।

21प्रियो, यदि हमारा मन हमें दोषी न ठहराए, तो हमें परमेश्वर पर भरोसा होता है। 22और हम जो कुछ माँगते हैं, हमें उन से मिलता है, क्योंकि हम उनकी आज्ञाएँ मानते हैं और वही करते हैं, जो उन्हें पसंद है।

23यह उनकी आज्ञा है, कि हमें परमेश्वर के बेटे यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करना चाहिए और जैसी उनकी आज्ञा है, एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए। 24जो उनकी आज्ञाओं को मानता है उन में बना रहता है और वह उस में। इसी से (पवित्र आत्मा से) हम जानते हैं, कि वह अपनी आत्मा के द्वारा जो उन्हों ने हमें दिया है हम में रहते हैं।

4 प्रिय भाइयो बहनो, किसी भी आत्मा पर विश्वास मत कर लेना, लेकिन परखना कि वे परमेश्वर से हैं या नहीं, क्योंकि इस दुनिया में बहुत से झूठे (जाली) भविष्यद्वक्ता हैं। 2परमेश्वर की आत्मा की पहचान यह हैः हर एक आत्मा जो यह मान लेती है कि यीशु मसीह देह में आए, परमेश्वर की ओर से है। 3प्रत्येक वह आत्मा जो यह स्वीकार नहीं करती

"सब कुछ जानते हैं"- वह महान हैं और कमज़ोरियों, असफ़लता, गुनाहों को जानने के बावजूद अपनी संतान के रूप में अपनाते हैं। तुलना करें भजन 103:8-14.

3:21 "यदि हमारा मन हमें दोषी न ठहराए"- जब हम प्रेम और अच्छे कामों से भरे होते हैं और पाप पर जीत हासिल करते हैं तब हमारा मन हमें दोषी नहीं ठहराएगा।

"भरोसा"- यह स्वधार्मिकता का भरोसा नहीं है लेकिन यह कि परमेश्वर हम में हैं और काम कर रहे हैं।

3:22 यूहन्ना 14:13-15.

"जो उन्हें पसंद है"- हमें यह भरोसा नहीं करना चाहिए कि परमेश्वर हमारी सुनें यदि हम उनकी आज्ञा नहीं मानते हैं और उनको खुश नहीं करना चाहते हैं। हमारी अनाज्ञाकारिता और स्वार्थी जीवन परमेश्वरीय आशीषें और प्रार्थना के जवाब को नहीं पा सकती। जो बातें प्रभु को खुश करती हैं वे प्रेम और विश्वास की हैं, वे विश्वास के काम हैं जो प्रेम से पैदा होते हैं। गल. 5:6; इब्रा. 11:6.

3:23 "नाम"- यूहन्ना 1:12.

3:24 यूहन्ना 14:20-23; 17:21-23.

"जानते"- पद 14,19; 2:5; 4:13

"अपनी आत्मा के द्वारा"- पवित्र आत्मा (यूहन्ना 14:16-17) आत्मा विश्वासियों को यह ज्ञान देता है कि वे परमेश्वर के बेटे-बेटियाँ हैं रोमि. 8:15-16.

"हमें दिया है"- 1 कुरि. 6:19; गल. 4:6; इफ़ि. 1:13-14

4:1-6 इन पदों में यूहन्ना ऐसे दो आधार परखने के लिए देता है, जिससे हम जान सकते हैं, कि लोग सच्चाई को अपना रहे हैं या नहीं। पद 2,3 पहला आधार और पद 6 दूसरा आधार देता है।

4:1 "किसी भी आत्मा पर विश्वास" - इस दुनिया में परमेश्वर का आत्मा है और गंदी आत्माएँ भी हैं। ये गंदी आत्माएँ लोगों को प्रेरित करती हैं, कि गलत सिद्धान्त सिखाएँ। ये उन में होकर भी बात कर सकती हैं। देखें 2 कुरि. 11:14-15; 1 तीमु. 4:1-3. हमें हर एक शिक्षक पर भरोसा नहीं करना चाहिए, जो सिखाना चाहते हैं, या वे आत्माएँ जो दूसरे मनुष्यों में से होकर सिखाना चाहती हैं।

"झूठे भविष्यद्वक्ता"- 2:18; 2 पतर. 2:1 शब्द बहुत पर गौर करें।

4:2-3 देखें 2:22.

"देह"- यूहन्ना 1:14; इब्रा. 2:14. इसका इन्कार यीशु के देह में आने का, कुवाँरी से जन्म का और परमेश्वर व मनुष्य के स्वभाव के एक होने का विरोध करना है - ये सब स्पष्ट सच्चाइयाँ हैं।

4:3 "स्वीकार नहीं करती"- खुले रूप में वे नहीं कहती हैं कि यीशु परमेश्वर हैं। सच्चाई को वे नहीं बताती। यह हो सकता है कि खुली तौर पर वे इस सच्चाई का इन्कार करें भी न, लेकिन इसको मानने की असफ़लता से वे दिखाती हैं कि वे विश्वास नहीं करती हैं। धोखेबाज़ और झूठे शिक्षकों को पहचाना जा सकता है - उनके शब्दों से और उनकी चुप्पी से।

कि यीशु देह में आए, परमेश्वर की ओर से नहीं है। यह यीशु विरोधी आत्मा है, जिसके आने के बारे में तुम ने सुन रखा था। यह आत्मा इस समय दुनिया में है।

4छोटे बच्चो, तुम परमेश्वर के हो और तुम ने उन पर जीत हासिल की है, इसलिए कि जो इस संसार में है उससे बढ़कर वह हैं जो तुम में हैं। 5वे संसार के हैं इसलिए संसार के बारे में बोलते हैं और संसार उनकी सुनता है। 6हम परमेश्वर के हैं। जो परमेश्वर को जानता है, हमारी सुनता है, लेकिन जो परमेश्वर का नहीं है, हमारी नहीं सुनता है। इसी से हमें सही और गलत की पहचान होती है।

7प्रियो, हम एक दूसरे से प्रेम रखें, इसलिए कि प्रेम परमेश्वर से है और हर एक जो प्रेम रखता है, परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है और परमेश्वर को जानता है। 8जो प्रेम नहीं करता है, वह परमेश्वर को नहीं जानता है क्योंकि परमेश्वर प्रेम हैं। 9परमेश्वर का प्रेम इस तरह से प्रगट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने प्रिय एकलौते बेटे को इस दुनिया

"इस समय दुनिया में"- 2 थिस्स. 2:7 से तुलना करें

4:4 "जीत हासिल की है"- 2:13; 5:4 विश्वासी परमेश्वर के चुने हुए हैं। उनका नया आत्मिक जीवन उन्हें परमेश्वर से मिला है। वे झूठे शिक्षकों को पहचान कर उनकी शिक्षा का तिरस्कार कर सकते हैं।

"जो इस संसार में है"-शैतान। परमेश्वर का आत्मा इन अशुद्ध आत्माओं से कहीं ज़्यादा शक्तिशाली है। इसलिए यीशु के लोग शैतान पर जीत हासिल कर सकते हैं याकूब 4:7; इफ़ि. 6:10-13.

"जो तुम में हैं"- यीशु का आत्मा 3:24; रोमि. 8:9-10.

4:5 "वे"- झूठे शिक्षक।

"संसार"- 2:15-16 झूठे भविष्यद्वक्ता वही सिखाते हैं जो बिना मुक्ति पाए हुए शारीरिक लोग सुनना चाहते हैं, इसलिए उन्हें स्वीकारा जाता है, 2 तीमु. 4:3

4:6 यह एक ज़रूरी परीक्षा है।

"हम"- यूहन्ना का मतलब बाईबल के शिक्षकों से है। सच्चे यीशु के शिष्य (जो परमेश्वर को जानते हैं) उनकी सुनते हैं, उन्हें परमेश्वर के जन के रूप में अपनाते हैं और सिखाने वाले भी उन्हें परमेश्वर की सन्तान कर के ग्रहण करते हैं। जो लोग बाईबल में यीशु की शिक्षा को नहीं अपनाते हैं, परमेश्वर से नहीं हैं, चाहे वे कुछ भी क्यों न समझें।

4:7-21 ये पद दिखाते हैं, कि प्रेम है क्या। प्रेम शब्द इन पदों में 24 बार आया है। यूहन्ना कहना चाहता है, परमेश्वर प्रेम हैं अपने प्रेम को उन्हों ने कार्य में दिखाया है, इसलिए हमें कार्य में अपना प्रेम दिखाना चाहिए (3:18)

4:7-8 "प्रेम रखें"- यूहन्ना 13:34. सच्चे प्रेम का स्त्रोत परमेश्वर में है, क्योंकि विश्वासी परमेश्वर से पैदा हुए हैं, उन्हें प्रेम करने में परमेश्वर की तरह होना चाहिए। यह अलौकिक प्रेम है (1 कुरि. 13:1)। यही परमेश्वर के पास है और यीशु को मानने वालों को वह देते हैं (यूहन्ना 17:26) इस दुनिया में यह किसी के पास नहीं है। दोस्तों और पारिवारिक सदस्यों के लिए जो प्रेम होता है, वह यह नहीं है। यह सेक्स वाला प्रेम नहीं है। इस में कोई स्वार्थ नहीं है, यह सेवा करने वाला और भलाई लाने वाला प्रेम है। परमेश्वर द्वारा यीशु को भेजे जाने में हम इस प्रेम को देखते हैं। (पद 9; रोमि. 5:8)। लोगों ने सचमुच में नया जन्म पाया है, इसका प्रमाण है कि अकथनीय प्रेम उन में होगा। यदि यह है, दिखाई ज़रूर देगा।

4:8 "जो प्रेम नहीं...नहीं जानता"- परमेश्वर के बारे में ज्ञान रखने की लोग डींग मार सकते हैं। लेकिन अगर उनके पास परमेश्वरीय प्रेम नहीं है, तो वे अपने आप को धोखा दे रहे हैं। तमाम अनुभव उनके हो सकते हैं, और भावनाएँ भी। लेकिन यदि वे मसीह के लोगों को अपना नहीं सकते तो सब कुछ मात्र ढोंग है।

"परमेश्वर प्रेम है"- पद 16 भी। यह अद्वितीय स्वभाव है।

4:9-10 यूहन्ना 3:16; रोमि. 5:8; इफ़ि. 2:4-5 । परमेश्वर ही सारे प्रेम के स्त्रोत हैं, मनुष्य नहीं। यदि प्रभु ने दिखाया न होता तो हम ने कभी भी अद्वितीय प्रेम को न जाना होता। हम उन से प्रेम न करते अगर उनका प्रेम हमारे अन्दर डाला नहीं गया होता।

में भेजा, ताकि हम उनके द्वारा जिंदा रहें (जीवन पाएँ)। 10प्रेम इस में नहीं कि हम ने परमेश्वर पिता से प्रेम किया है, लेकिन यह कि उन्हों ने हम से प्रेम किया और हमारे गुनाहों को मिटाने के लिए अपने बेटे को कुर्बान होने के लिए भेज दिया।

11प्रिय दोस्तो, इसलिए कि परमेश्वर ने हमसे इतना प्रेम किया, हमें भी एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए। 12किसी ने भी परमेश्वर को नहीं देखा है, लेकिन यदि हम एक दूसरे से प्रेम रखते हैं, तो परमेश्वर हम में रहते हैं और हमारे द्वारा उनका प्रेम हम में पूरी तरह से दिखाई दिया है।

13परमेश्वर ने अपने आत्मा को इस सबूत के रूप में दिया है, कि हम उन में रहते हैं और वह हम में। 14इसके साथ ही हम ने अपनी आँखों से देखा है और गवाही देते हैं कि पिता ने अपने बेटे को दुनिया का मुक्तिदाता होने के लिए भेजा है। 15जितने लोग यह ऐलान करते हैं कि यीशु परमेश्वर के बेटे हैं, उन में परमेश्वर निवास करते हैं और वे परमेश्वर में।

16हमें मालूम है कि परमेश्वर हमसे कितना प्रेम करते हैं, और हम ने अपना भरोसा उन पर रखा है। परमेश्वर प्रेम हैं, और वे सभी जिनकी ज़िन्दगियों में प्रेम है, वे परमेश्वर में जी रहे हैं और परमेश्वर उन में। 17जैसा हम परमेश्वर में रह रहे हैं, हमारा प्रेम दिन ब दिन बढ़ता ही रहता है। और तब हम न्याय के दिन डरेंगे नहीं, लेकिन बड़ी हिम्मत से उनके सामने खड़े रह सकेंगे, क्योंकि यहाँ इस दुनिया में हम मसीह की तरह हैं। 18ऐसे प्रेम में किसी तरह का डर नहीं पाया जाता है, क्योंकि सच्चा (परिपक्व) प्रेम सब तरह के डर को निकाल फेंकता है। यदि हम डरते हैं, तो

4:10 "कुर्बानी"- 2:2 के नोट्स देखें।

4:11 परमेश्वर क्या हैं और विश्वासी क्या हैं, इसलिए उन्हें एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए

4:12 "किसी...देखा"- यूहन्ना 1:18; 1 तीमु. 6:16.

"परमेश्वर हम में रहते हैं"- यूहन्ना 14:23; रोमि. 8:9; यह मुक्ति पाए हुए लोगों के बारे में ही सच है (इफ़ि. 2:12; 4:18) इसकी सच्चाई का सबूत यह है कि आपस में एक दूसरे के लिए प्रेम है। यदि परमेश्वर हम में हैं, प्रेम हमारे भीतर है। यदि स्वर्गिक प्रेम हमारे भीतर है, परमेश्वर हमारे अन्दर है।

"उनका...से"- यह एक दूसरे के लिए प्रेम के कारण है कि पृथ्वी स्वर्गिक प्रेम से भर सकती है।

4:13 देखें 3:24; यूहन्ना 17:21-23.

4:14 देखें 1:1-2.

"दुनिया का मुक्तिदाता"- 2:2; यूहन्ना 4:42; 1 तीमु. 4:15.

4:15 "ऐलान करते हैं"- देखें 1:9 वहाँ यही शब्द आता है। यीशु को परमेश्वर का पुत्र कर के अपनाना - इसका मतलब है कि हम उन पर ईमान लाएँ और जो कुछ उन्हों ने कहा, कहें। हमें मालूम है कि यीशु परमेश्वर के बेटे हैं, क्योंकि उन्हों ने यह प्रगट किया है। यह विश्वास हमें परमेश्वर तक लाता है। यही हमारे जीवन को उन से जोड़ता है।

"परमेश्वर के बेटे"- देखें मत्ती 3:17; यूहन्ना 3:16; 5:18-25.

4:16 उनका कहना नहीं, लेकिन उन्हों ने प्रेम का सबूत भी दिया है पद 1; 3:16. इसलिए कि प्रभु ने हमें अपने प्रेम के पुख्ता सबूत दिए हैं, हमें कभी भी शक नहीं करना चाहिए। चाहे कैसी भी समस्याएँ, परेशानियाँ या तकलीफ़ें आएँ, हमारे ऊपर और उनके ऊपर जो यीशु के हैं। हम प्रभु के प्रेम पर आसरा कर सकते हैं। यह प्रेम हमें भी छोड़ेगा नहीं भजन 23:6; रोमि. 8:35-39; 1 कुरि. 13:8.

4:17 "बढ़ता ही रहता है"- पद 12.

"न्याय के दिन"- मत्ती 10:15; 11:22,24; 2 कुरि. 5:10; 2 पतर. 2:9; 3:7.

"हिम्मत"- 3:19,21; 2:28.

"हम मसीह की तरह हैं"- यूहन्ना 17:14. परमेश्वर अपने बच्चों का इन्साफ़ अपने बच्चों की तरह करेंगे, परमेश्वर के बच्चों के अन्दर परमेश्वरीय जीवन और प्यार है।

4:18 क्या इन्साफ़ के ख्याल हमारे मन में डर उत्पन्न करते हैं? यह इस बात का प्रमाण है कि हम वैसा प्रेम नहीं कर रहे हैं, जैसा करना चाहिए।

"सच्चा"- (परिपक्व) - ऐसा प्रेम जो पूरी तरह से परिपक्व हुआ है। यह हम यीशु में देखते हैं, और हमारे अन्दर होना चाहिए (तुलना इफ़ि.

यह इन्साफ़ के दिन का डर है। यह दिखाता है कि उन के प्रेम ने हमारे जीवन में जड़ नहीं पकड़ी 19इसलिए कि उन्हों ने हम से पहले प्रेम किया, हम उन से प्रेम करते हैं।

20यदि कोई कहता है, "मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूँ, लेकिन अपने मसीही भाई या बहन से नफ़रत करता है, वह इन्सान झूठ बोलता है, इसलिए कि यदि हम जिन लोगों को देखते हैं, उन से प्रेम नहीं करते, तो हम परमेश्वर से प्रेम कैसे कर सकते हैं, जिन्हें हम ने नहीं देखा है। 21स्वयं परमेश्वर ने यह आदेश दिया है कि जो परमेश्वर से प्रेम रखता है, वह अपने भाइयों और बहनों से भी प्रेम रखे।

5 जो व्यक्ति यह मान लेता है कि यीशु ही मसीह हैं, वही परमेश्वर से जन्मा है। हर वह जन जो उत्पन्न करने वाले से प्रेम करता है, वह उन से भी प्रेम रखता है जो परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।

2जब हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं और उनकी आज्ञाओं को मानते हैं उसी से सिद्ध होता है, कि हम परमेश्वर के बेटे-बेटियों से प्रेम करते हैं। 3परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना, परमेश्वर से प्रेम रखना है और परमेश्वर की आज्ञाएँ मुश्किल (बोझ) नहीं हैं।

4जो व्यक्ति परमेश्वर से पैदा हुआ है, वह संसार पर जीत प्राप्त करता है। और

3:16-19)। जब यह हमारे भीतर होगा, हम इन्साफ़ से न डरेंगे देखें 2 कुरि. 5:6-9; फ़िलि. 1:21,23; 2 तीमु. 4:7-8.

"डर को निकाल फेंकता है"- यहाँ यूहन्ना परमेश्वर के डर की बात नहीं करता है। (जो परमेश्वर के प्रति आदर और सम्मान है)। ऐसे डर की ज़रूरत तो है (उत्पत्ति 20:11; अय्यूब 28:28; भजन 34:11-14; 86:11; 111:10; नीति. 1:7) यहाँ वह सज़ा या दण्ड के डर की बात करता है।

4:19 पद 10 परमेश्वर दिखाते हैं कि सच्चा प्रेम क्या है। इसी प्रेम से हम उनकी सन्तान बन गए हैं और हमारे भीतर उनका प्रेम डाला गया है। तुलना रोमि. 5:5 से करें।

4:20 देखें 2:9; 3:14-15 ऐसा लोग महसूस कर सकते हैं कि बिना दूसरों को प्रेम किए वे सृष्टिकर्ता से प्रेम कर सकते हैं। लेकिन यह संभव नहीं है। यदि हम प्रभु से प्रेम करते हैं, तो ऐसा इसलिए है कि प्रभु का अजीब प्रेम हम में डाला गया है। इस से प्रेरित होकर हम दूसरों से प्रेम कर सकते हैं। हमारे प्रभु के प्रति और उनके बनाए गए लोगों के प्रति प्रेम को अलग नहीं किया जा सकता है।

4:21 जो हमारी आत्मिक ज़रूरत है प्रभु उसे करने की आज्ञा देते हैं। वह प्रेम की बात कर रहे हैं, जो कामों में दिखता है (3:16-18)

5:1-2 "यीशु ही मसीह"- 2:22; 3:23; 4:2. यह मानना कि यीशु मसीह (बचाने वाले) हैं, यह स्वीकार करना है कि सृष्टिकर्ता का यीशु के बारे में क्या मत है उसी पर भरोसा करना। सचमुच में यह मान लेना कि यीशु मसीह हैं, स्वर्गिक इनाम है (फ़िलि. 1:29; इफ़ि. 2:8-9) जिसको यह सच्चाई मिल गयी, उसके ऊपर एक खास असर होगा (तुलना करें प्रे.काम 2:36-42)। यह सच है कि मुँह से कहना, यीशु बचाने वाले हैं, और मन से न मानने में काफ़ी फ़र्क है और कोई फ़ायदा भी नहीं।

"उस से भी प्रेम"- यदि हम जग के स्वामी से प्रेम करते हैं तो उनके बच्चों से भी करेंगे (4:20)।

"परमेश्वर से उत्पन्न"- 2:29; यूहन्ना 1:12-13.

5:3 यूहन्ना 17:15,21,23.

"मुश्किल (बोझ)"- तुलना करें मत्ती 11:29-30.

5:4 इसलिए कि प्रभु के लोगों में नया स्वभाव है, परमेश्वरीय आज्ञाएँ बोझ नहीं हैं। यह स्वभाव परमेश्वर से प्रेम करता है। (4:12)

"जो व्यक्ति"- कोई भी "जीत हासिल करने वाला" 2:13-14; 4:4 इस दुनिया के तौर तरीकों और गुनाहों को छोड़ने और यीशु के पास विश्वास से आने के द्वारा यीशु के शिष्य संसार पर जीत पाने लगे थे। जिस सेकेण्ड ऐसा हुआ, उन्हें दुनिया पर जीत मिली। मसीह पर लगातार विश्वास करते रहने से, वे लगातार जीत पाते जाते हैं। प्रभु ने इन लोगों को इस सांसारिकता से बाहर किया है और खास लोग बनने के लिए अलग किया है (यूहन्ना 17:6; 14:16)। विश्वास जीत है इस दुनिया पर, क्योंकि यह हमें मसीह से बाँधता हे, जो दुनिया पर जीत पाने वाले सर्वश्रेष्ठ विजयी हैं (यूहन्ना 16:33)

संसार पर जीत हासिल करने वाला है हमारा विश्वास। 5कौन है जो संसार पर जीत हासिल करता है? वही जो यह मान चुका है कि यीशु परमेश्वर के पुत्र (देहधारी परमेश्वर) हैं।

6यह वही हैं जिनका आना 'पानी' और 'खून' से हुआ केवल पानी से नहीं, बल्कि पानी और खून से। इस बात की गवाही पवित्र आत्मा देता है, क्योंकि यह आत्मा सत्य है।

7स्वर्ग में तीन हैं, जो गवाही देते हैं - पिता, उनका वचन (यीशु) और पवित्र आत्मा। ये तीनों एक हैं।

8इस धरती पर भी तीन हैं जो गवाही देते हैः पवित्र आत्मा, पानी और खून (यीशु मसीह की कुर्बानी)। ये तीनों भी एक हैं।

9यदि हम लोगों की गवाही मान लेते हैं, तो परमेश्वर की गवाही क्यों न मान लें, उनकी गवाही तो बड़ी है, क्योंकि परमेश्वर ने अपने बेटे के बारे में गवाही दी है। 10जो परमेश्वर के बेटे पर भरोसा रखता है, उसके भीतर ही एक गवाही है। जो परमेश्वर पर भरोसा नहीं रखता, उसे परमेश्वर झूठा ठहराते हैं, क्योंकि उसने

5:5 देखें 4:15.

"जो यह मान चुका है"- लोग सन्यासवाद से सांसारिकता को जीतना चाहते हैं या समाज से दूर जाकर। यह तो भागना है, जीतना नहीं। इस से फ़ायदा नहीं है। जो लोग यह तरीका अपनाते हैं, उनके मन में तो संसारिकता बनी रहती है। देखें जीत हासिल करने के बारे में प्रका. 2:7.

"मान चुका"- हमारे मन में परमेश्वर के लोगों की मदद करने के लिए अच्छी भावनाएँ, क्या इस बात का सबूत नहीं कि हम उन से प्रेम करते हैं, बाईबल की बातों को अगर न मानें, सिर्फ़ भावनाएँ होने से काम नहीं चलेगा। प्रेम और हुक्म मानना साथ-साथ होते हैं। यदि हम दिल से प्रभु के आदेशों का पालन करते हैं, तो निश्चित है कि हम परमेश्वर की सन्तान से प्रेम करते हैं।

5:6 मत्ती 3:13-17; 26:28; यूहन्ना 19:34 । बाईबल में अक्सर पानी आत्मिक जीवन या पवित्र आत्मा की तरफ़ इशारा है। (यूहन्ना 4:10; 7:38-39)। खून पाप की क्षमा के लिए कुर्बानी को दिखाता है जो माफ़ी का एक आधार है (1:7; इफ़ि. 1:7)। मसीह परमेश्वर की आत्मा से ही उत्पन्न हुए थे। आत्मा से अभिषेक हुआ था और परिपूर्ण भी थे। इसलिए दूसरों के लिए प्रेरणादायक थे। हमारे गुनाहों की माफ़ी के लिए बलिदान होकर उन्हों ने पृथ्वी की अपनी सेवकाई को समाप्त किया।

"गवाही पवित्र आत्मा देता है"- "आत्मा सत्य है" - यूहन्ना 14:6,17; भजन 31:5; तीतुस 1:2.

5:7-8 इन पदों का एक हिस्सा "स्वर्ग में पिता, वचन और पवित्र आत्मा ये तीनों एक हैं। तीन हैं जो इस धरती पर गवाही देते हैं" शुरूआती यूनानी पांडुलिपियों में जो अभी उपलब्ध हैं, नहीं है। ये प्रसिद्ध लॅटिन अनुवाद में है। 16वीं शताब्दी के एक ज्ञानी इरास्मस ने इन पदों को यूनानी लेख में मिला लिया और प्रकाशित किया था। इसलिए यह किंग जेम्स अनुवाद में है। यह असंभव नहीं कि ये मूल यूनानी पाण्डुलिपि में थे।

5:8 मसीह यीशु के जीवन और मृत्यु की सच्चाइयाँ लिखी हुई हैं और गवाह के रूप में हैं। परमेश्वर का आत्मा हमसे उनके बारे में भी कहता है। तीन सहमत हैं, पूरी तरह से। जो भीतरी गवाह कहता है, वही बाहरी कहता है। विश्वासी का अनुभव और बाइबल, दोनों ही में तालमेल है।

5:9 लोगों की गवाही - यूहन्ना 8:17 से तुलना करें। लोगों की सुनकर हम विश्वास कर लेते हैं, इसलिए क्या हम ईश्वर जो सब से बढ़कर है, उनकी न सुनें पानी, खून और पवित्र आत्मा (पद 6,8) यीशु के बारे में गवाह है।

"परमेश्वर की गवाही"- यूहन्ना 5:36-37 से तुलना करें और यूहन्ना 8:18 से भी। हमारे पास न्यू टेस्टामेन्ट में यह गवाही है। सचमुच हम कह सकते हैं कि पूरी बाईबल परमेश्वर की मसीह के बारे में गवाही हैं।

5:10 जब हम मसीह को अपनाते हैं, हमारे मन कायल होते हैं, कि यीशु के बारे में लिखी बातें सच हैं। यह ईश्वर के आत्मा से होता है।

"झूठा"- 1:10 परमेश्वर के कहे पर भरोसा न करना उनकी बेइज़्ज़ती करना है।

परमेश्वर के बेटे के बारे में दी गयी गवाही पर विश्वास नहीं किया। 11गवाही यह हैः परमेश्वर ने हमें हमेशा का जीवन दिया है और यह जीवन उनके बेटे में है। 12जिसके पास बेटा है, उसके पास ज़िन्दगी है जिसके पास बेटा नहीं है, उसके पास हमेशा की ज़िन्दगी भी नहीं है।

13मैंने ये बातें तुम सभी को जिन्होंने परमेश्वर के बेटे के नाम पर विश्वास किया है लिखी हैं, ताकि तुम यह जान लो कि अनन्त जीवन तुम्हें मिल चुका है।

14उनके सम्बन्ध में हमें यह हिम्मत है, कि यदि हम उनकी योजना (इच्छा) के अनुसार कुछ माँगते हैं, वह हमारी सुनते हैं। 15यदि हमको मालूम है कि जो कुछ हमारी बिनती होती है, वह सुनते हैं तो हमें यह भी मालूम है कि जो कुछ हम ने माँगा, हमें मिल चुका है।

16यदि कोई इन्सान अपने भाई को ऐसा गुनाह करते देखे, जिससे वह मरेगा नहीं तो प्रार्थना करे, प्रभु उसे जीवन देंगे। लेकिन ऐसा गुनाह भी है, जो मौत तक पहुँचाता है

5:11 "हमेशा का जीवन"- यूहन्ना 3:16,36; 6:47; 17:2.

"उनके बेटे में"- पद 20; 1:2; यूहन्ना 11:25-26; 14:6; कुल. 3:4

5:12 हमेशा की ज़िन्दगी, आत्मिक ज़िन्दगी सिर्फ़ एक व्यक्ति यीशु में है। यदि वह हम में नहीं तो आत्मिक तरीके से मरे हुए हैं। किसी और तरीके से परमेश्वर से हम आत्मिक जीवन न पा सकेंगे (यूहन्ना 3:36)। हम इसे कैसे पा सकते हैं यदि इसके स्त्रोत को नकारें?

5:13 यह प्रभु की इच्छा नहीं है कि मसीह में मुक्ति के बारे में लोग संदेह रखें। उनके पास है और उन्हें भरोसा रखना है यही एक पहला कारण है कि यूहन्ना को प्रेरणा मिली कि वह यह पत्र लिखे। विश्वासी कैसे मान सकते हैं कि उन्हें उद्धार मिल चुका है। यूहन्ना कौन से निशान बताता है?

मुक्ति की निश्चयता

बाईबल में परमेश्वर की गवाही पर भरोसा करने से मिलती है (पद 9,11)

पवित्र आत्मा की भीतरी गवाही से (पद 10; 3:24)

पाप की क्षमा की प्रतिज्ञा पर भरोसा करने से (1:7-9)

परमेश्वर की आज्ञाकारिता के सबूत पर (2:5; 5:2)

सही जीवन के सबूत से (2:29; 3:6,10)

हमारे जीवन में प्रेम के फल के सबूत से (3:14,18,19; 4:12)

यूहन्ना सत्य के कथन सामने रखता है जिससे विश्वासियों में आश्वासन आता है (4:15; 5:1) मुक्ति का पूरा आश्वासन तीन बातों पर निर्भर है।

लिखित बाईबल - विश्वासियों का भीतरी अनुभव - बाहरी जीवन - चालचलन और प्रेम।

5:14-15 इसलिए कि यीशु के शिष्यों के पास अनन्त जीवन है वे परमेश्वर से संगति की हिम्मत कर सकते हैं (तुलना रोमि. 5:2; इफ़ि. 2:18; 3:12; इब्रा. 4:16; 10:19-22)। हमारा भरोसा यह है, कि परमेश्वर उन बिनतियों का जवाब देते हैं जो उनकी इच्छा के मुताबिक हैं। हमारी इच्छा से माँगना दूसरी बात है। ऐसी प्रार्थना के उत्तर की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। मत्ती 6:10 हर जन के मन की कामना होनी चाहिए। लेकिन प्रभु क्या चाहते हैं, बाईबल बतलाती है। यदि हम इस से अनजान हैं तो नहीं जान पाएँगे।

5:16 जो लोग बुराई में हैं, उनके लिए प्रार्थना हमें करनी चाहिए। तुलना याकूब 5:16.

"जिससे वह मरेगा नहीं"- कुछ गुनाह मौत को क्यों लाते हैं? क्योंकि वह माफ़ कर सकते हैं और करेंगे, लेकिन जब मान लिया जाएगा (1:9)। वह कौन-सा पाप है जो मौत तक ले जाता है। इसलिए कि यूहन्ना कुछ बताता नहीं है, हम सही अनुमान नहीं लगा सकते। शायद मतलब यह है एक ऐसा गुनाह जिसे प्रभु माफ़ नहीं करेंगे। देखें मत्ती 12:31-32; इब्रा. 2:3; 6:4-6; 10:26-31; 12:25. जो लोग जानते बूझते मसीह को और सुसमाचार को त्यागते हैं और परमेश्वर को मौका ही नहीं देते कि वह माफ़ करें। यूहन्ना नहीं कहता है कि विश्वासी ऐसा कुछ कर सकते हैं। सच पूछें तो 3:6,9 सिखाता है कि वे ऐसा कुछ कर ही नहीं सकते।

मैं नहीं कहता कि ऐसा गुनाह करने वालों के लिए प्रार्थना की जाए। 17हर तरह की दुष्टता गुनाह है। ऐसा गुनाह भी है जिसकी सज़ा मौत नहीं है।

18हम जानते हैं कि जो परमेश्वर से जन्मा है, वह गुनाह करना जारी नहीं रखता, लेकिन वह जो परमेश्वर से जन्मा है, गुनाह करने से बचता है। और ऐसे व्यक्ति को शैतान छू भी नहीं सकता।

19हमें मालूम है कि हम परमेश्वर के हैं और सारी दुनिया उस दुष्ट के शिकंजे में है।

20हमें यह पता है कि परमेश्वर के पुत्र, यीशु आ चुके हैं और परमेश्वर ने हमें समझ दी है, ताकि हम उस यीशु को जो सच्चे हैं, अपना सकें। उनके बेटे यीशु मसीह जो सच्चे हैं, हम उन्हीं में हैं। वही सच्चे परमेश्वर और अनन्त जीवन हैं।

21छोटे बच्चो, अपने आप को मूरतों से बचाओ। ऐसा ही हो।

5:17 देखें 3:4 यह सच्चाई कि ऐसा गुनाह है जो मौत तक नहीं ले जाता है हमें ज़्यादा गुनाह करने के लिए प्रेरित नहीं करना चाहिए। लेकिन इस से यह आशा मिलती है अगर हमसे गुनाह हो जाए तो माफ़ी भी है।

5:18 "गुनाह करना जारी नहीं रखता"- 3:6 बहुत से लोगों को कहना है कि "जो परमेश्वर से जन्मा है" किसी भी विश्वासी की तरफ़ इशारा है और "जो परमेश्वर से जन्मा था" - यीशु की तरफ़ संकेत है। यीशु मसीह का कुवाँरी मरियम से पैदा होना पवित्र आत्मा से हैं। (मत्ती 1:21; लूका 1:35; गल. 4:4) यीशु मसीह मरने के बाद जी उठना एक जन्म के बराबर था। (प्रे.काम 13:33; इब्रा. 1:5) आदि से जो यीशु का जीवन था, वह परमेश्वर ही से था। (यूहन्ना 5:26)

"छू...सकता"- शैतान का हाथ यीशु के विश्वासी पर नहीं हो सकता। यीशु उनके अन्दर हैं। यीशु उस से ज्यादा ताकतवर हैं (4:4) यहाँ यूहन्ना जो कहता है वह सभी नया जन्म पाए लोगों के बारे में सच है।

5:19 "मालूम"- इस पत्र में देखें कि यूहन्ना के अनुसार विश्वासी क्या-क्या जानते हैं - 2:5,20; 3:2,5,14,16,19,24; 4:16; 5:13,15,18,20.

"दुष्ट के"- 2:16 यूनानी में "दुष्ट में"- देखें यूहन्ना 14:30; 2 कुरि. 4:4; इफ़ि. 2:2; 2 तीमु. 2:26 यही कारण है कि यह संसार दुष्टता से भरा है।

5:20 "यह पता है" - तुलना करें लूका 24:45; 1 कुरि. 2:12,16.

"सच्चे"- शब्द यीशु के लिए हैं। फ़िलि. 2:6; लूका 11:25 देखें। वह हमेशा का जीवन भी हैं। (पद 11; यूहन्ना 11:25; 14:6)। सिर्फ़ परमेश्वर के लिए कहा जा सकता है कि वह सदाकाल के हैं।

"अपना सकें"- मत्ती 11:27. यह मात्र तरीका है ईश्वर का सच्चा ज्ञान पाने का "उन्हीं में"- यूहन्ना 17:21-23; 1 कुरि. 12:12-13; इफ़ि. 1:3-4 दुनिया दुष्ट (शैतान) में है। विश्वास मसीह में है।

5:21 "मूरतों"- उसने सच्चे परमेश्वर की बात की है। इसलिए उसके दिमाग में झूठे ईश्वरों की बात भी आयी। वह सब जिसकी आराधना इन्सान करता है, सेवा करता है, और जो सच्चा प्रभु नहीं, वह मूरत ही है। एक मूरत एक चीज़ की बनी हो सकती है। ईश्वर के बारे में झूठा विचार भी मूरत हो सकता है। हम अपने आपको हर तरह की मूर्तिपूजा से बचाएँ।